मध्यकालीन कविता

अवधारणा और स्वरूप

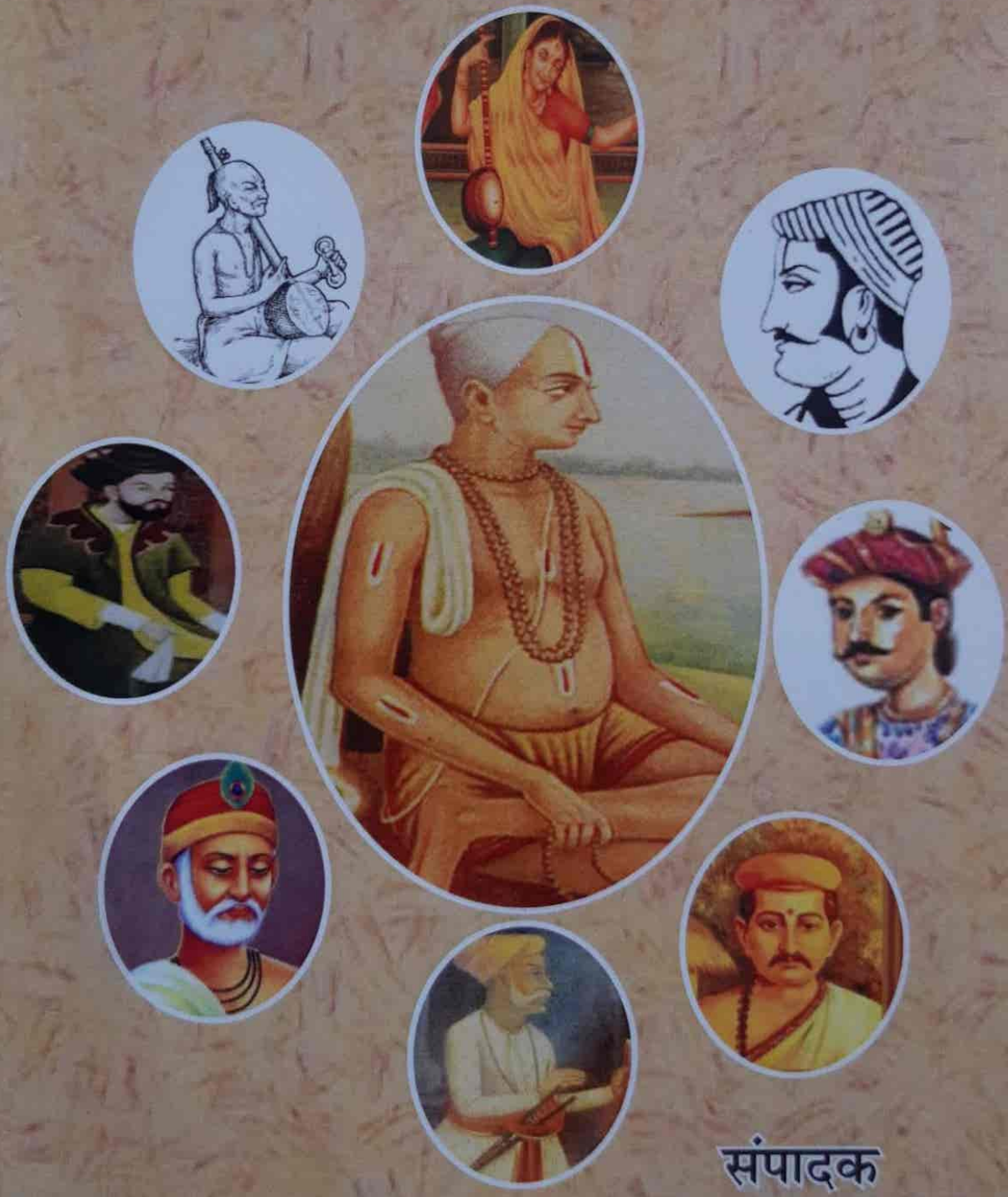

संपादक
डॉ. प्रीति सिंह
नितेश उपाध्याय

इस पुस्तक के सर्वाधिकार सुरक्षित हैं। प्रकाशक, संपादक की लिखित अनुमति के बिना इस पुस्तक या इसके किसी भी अंश का किसी भी माध्यम से अथवा ज्ञान के संग्रहण एवं पुनर्प्रयोग की प्रणाली द्वारा, किसी भी रूप में, पुनरुत्पादित अथवा संचारित-प्रसारित नहीं किया जा सकता, इसे संक्षिप्त, परिवर्धित कर प्रकाशित करना कानूनी अपराध है।

ISBN 978-93-91435-26-4

प्रथम संस्करण, 2021

© संपादकाधीन

पुस्तक : मध्यकालीन कविता : अवधारणा और स्वरूप

संपादक : डॉ. प्रीति सिंह, नितेश उपाध्याय

प्रकाशक : **संकल्प प्रकाशन**

1569/14 नई बस्ती बक्तौरीपुरवा, बृहस्पति मन्दिर, नौबस्ता, कानपुर-208 021

दूरभाष : 094555-89663, 070077-49872

Email : sankalpprakashankanpur@gmail.com

मूल्य : ₹ 595/-

पृष्ठ : 288

शब्द-सज्जा : रुद्र ग्राफिक्स, हनुमन्त विहार, नौबस्ता, कानपुर-21

आवरण : गौरव शुक्ल, कानपुर-21

मुद्रण : सार्थक प्रिंटर्स, नौबस्ता, कानपुर-21

अनुक्रम

1. रीतिकाव्य : अध्ययन की नयी दृष्टि
प्रो. प्रभाकर सिंह 11-34

2. कबीर साहित्य की वर्तमान अर्थवत्ता
प्रो. सदानंद शाही 35-41

3. भक्तिकाल हिन्दी साहित्य का स्वर्ण युग
प्रो. जंगबहादुर पाण्डेय 42-45

4. राष्ट्रीय अखंडता में संतों की सामाजिक भूमिका
डॉ. राजकुमार उपाध्याय 'मणि' 46-52

5. रामचरितमानस में समाजपरक जीवन मूल्य
डॉ. अमिता रानी सिंह 53-60

6. भक्ति काव्य : प्रकृति एवं स्वरूप
डॉ. प्रीति सिंह 61-75

7. रस ध्वनि के परिप्रेक्ष्य में रामचरितमानस की काव्यभाषा का विवेचन
डॉ. सुजीत कुमार सिंह 76-85

8. श्री वल्लभ गुरू तत्त्व सुनाओ, लीला भेद बताओ (वल्लभाचार्य और उनका दर्शन)
डॉ. विनम्र सेन सिंह 86-94

9. रीतिकालीन हिन्दी-काव्य में भगवद् भक्ति
डॉ. चन्द्रकान्त सिंह 95-101

10. गुरुनानक के काव्य में धर्म और आचरण की प्रासंगिकता
डॉ. प्रिया शर्मा 102-108

11. भक्तिकाव्य का मानवीय- सांस्कृतिक स्वरूप
डॉ. सत्यदेव 109-116

12. भक्ति आंदोलन के प्रेरणा-स्रोत
डॉ. सिन्धु सुमन 117-124

13. भक्ति-आन्दोलन का सामाजिक पक्ष एवं स्वामी रामानन्द
डॉ. जितेन्द्र कुमार सिंह 'संजय' 125-137

6.

भक्ति काव्य : प्रकृति एवं स्वरूप

डॉ. प्रीति सिंह

मध्यकालीन भक्ति आंदोलन को प्रायः एक स्वर से उत्तर भारत की एक महान सांस्कृतिक घटना के रूप में स्वीकार किया गया है। हिंदी साहित्य के इतिहास में संवत् 1375 से लेकर संवत् 1700 विक्रमी का समय भक्ति काल कहा जाता है। भक्ति धारा का पर्यावसान श्रृंगार या रीति काव्यधारा में होता है।यह धारा संवत् 1700 से लेकर 1900 विक्रमी तक प्रवाहित होती रही है। भक्ति–काल में रीति काल को सम्मिलित करके इसे हिंदी साहित्य का 'मध्ययुग' कहा गया है। भक्तिकाल को पूर्व–मध्यकाल के नाम से भी जाना जाता है। साहित्य की कसौटी मनुष्य है एवं भक्ति आंदोलन का साहित्य मनुष्य की आकांक्षा का उद्घोष है। साहित्य किसी भी युग का हो, उसके निर्माण में तत्कालीन समाज के धार्मिक विश्वास एवं परिस्थितियाँ सदैव अपना महत्व रखती हैं। शुक्ल जी कहते भी हैं कि प्रत्येक देश का साहित्य वहाँ की जनता की चित्तवृत्ति का संचित प्रतिबिम्ब होता है।

भक्तिकाल के विषय में डॉ. नगेन्द्र के विचार है– "हिंदी साहित्य के संदर्भ में भक्तिकाल से तात्पर्य उस काल से है, जिसमें मुख्यतः भागवत धर्म के प्रचार तथा प्रसार के परिणामस्वरूप भक्ति आंदोलन का सूत्रपात हुआ था और उसकी लोकोन्मुखी प्रवृत्ति के कारण धीरे धीरे लोक प्रचलित भाषाएँ भक्ति भावना की अभिव्यक्ति का माध्यम बनती गयी और कालांतर में भक्ति विषयक विपुल साहित्य की बाढ़–सी आ गयी। परंतु यह भावना वैष्णव धर्म तक ही सीमित ना थी अपितु शैव, शाक्त, आदि धर्मों के अतिरिक्त बौद्ध और जैन सम्प्रदाय तक इस प्रवाह से प्रभावित हुए बिना न रह सके।"[1]

माना जाता है कि यह पहला भारतीय नवजागरण था, जो कश्मीर से कन्याकुमारी एवं गुजरात से असम तक फैला हुआ था। जहाँ तक मध्यकालीन भक्ति आंदोलन का प्रश्न उठता है, वह मूलतः धार्मिक सांस्कृतिक आंदोलन के रूप में हमारे समक्ष आता है। भक्ति काव्य के आंदोलन व स्वरूप पर चर्चा करने से पूर्व उस समय की पृष्ठभूमि के विषय में जान लेना अति आवश्यक है।